कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 08, (जनवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 03–04

धनिया की वैज्ञानिक खेती

[1]लालू प्रसाद, [2]डॉ.सी.एन.राम, [3]डॉ.अनिल कुमार, एवं [4]वीरेन्द्र कुमार
[1]शोध छात्र, [2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष [3]सहायक प्राध्यापक
सब्जी विज्ञान विभाग,
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: laluprasadrsm@gmail.com

धनिया एक बहुमूल्य बहु उपयोगी मसाले वाली आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी फसल है। भारत धनिया का प्रमुख निर्यातक देश है। पत्तियां सब्जियों में सुगंध बढ़ाने के लिए, पिसा हुआ धनिया सब्जी मसालों एवं खाद्य पदार्थों में स्वाद एवं सुगंध वर्धन में। इसके बीजों को आचार, सूप, सास आदि में डाला जाता है। इसमें कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। दस्त, अपच, पेचिश, जुकाम तथा मूत्र सम्बन्धित रोगों में प्रयुक्त होती है।

जलवायु

शुष्क एवं ठंडा मौसम। अंकुरण के लिये 21–27°C एवं वानस्पतिक वृद्धि के लिए 12–20 तथा फसल पकाव के समय 30–35° C तापमान उपयुक्त होता है। भूमि का चुनाव एवं उसकी तैयारी धनिया की सिंचित फसल के लिये अच्छा जल निकास वाली अच्छी दोमट भूमि सबसे अधिक उपयुक्त होती है और असिंचित फसल के लिये काली भारी भूमि अच्छी होती है।

धनिया क्षारीय एवं लवणीय भूमि को सहन नही करता है। अच्छे जल निकास एवं उर्वराशक्ति वाली दोमट या मटियार दोमट भूमि उपयुक्त होती है। मिट्टी का पी.एच. 6.5 से 7.5 होना चाहिए।

धनिया की उन्नत प्रजातियां

नरेन्द्र धनिया–1, नरेन्द्र धनिया–2, अजमेर कोरिएंडर–1, हिसार आनन्द, हिसार सुरभि, पंत हरित्मा, गुजरात धनिया–1, एसीआर–1, गुजरात धनिया–2, पूसा चयन–360 एवं राजेन्द्र स्वाति ।

बोने का समय

धनिया की फसल रबी मौसम में बोई जाती है। धनिया बोने का सबसे उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर है।

बीज दर एवं बीजोपचार

सिंचित अवस्था में 15–20 कि.ग्रा./हे. बीज तथा असिंचित में 25–30 कि. ग्रा./हे. बीज की आवश्यकता होती है। भूमि एवं बीज जनित रोगो से बचाव के लिये बीज को ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना लाभदायक है।

खाद एवं उर्वरक

असिंचित धनिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए गोबर खाद 20 टन प्रति हेक्टेय के साथ 40 कि. ग्रा. नत्रजन, 30 कि.ग्रा. स्फुर, 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से तथा सिंचित फसल के लिये 60 कि.ग्रा. नत्रजन, 40 कि.ग्रा. स्फुर, 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि. ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

सिचाई

धनिया मे 4–6 सिचाई की आवस्यकता होती है। पहली सिचाई 30–35 दिन पर दूसरी 50–60 दिन पर, तीसरी 70–80, चौथी 90–100, पाँचवी 105–110 एवं छठी सिचाई 115–125 दिन पर करनी चाहिए। सिचाई हमेशा हल्की करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई के 30–35 दिन के बाद प्रथम निकाई–गुड़ाई कर के खर पतवार निकाल देना चाहिए। धनिया के पौधों में खरपतवार नियंत्रण की अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए, खेत की जुताई के समय ही खरपतवार पर नियंत्रण पाने के लिए, खरपतवारनाांक का छिड़काव कर देना चाहि ।

फसल संरक्षणः

धनिया की फसल पर मुख्यतः उकठा, चूर्णिल, फफूंद तथा तना सूजन रोगो का प्रकोप होता है। इसके अलावा माहू नामक कीट फसल को प्रभावित करता है।

उकठाः यह रोग जड़ में लगता है और पौध मुरझा जाता है। इसका प्रकोप पौधे की छोटी अवस्था में अधिक होता है।

नियंत्रणः

1. बीज को एग्रोसान जी.एन., कैप्टान, सेरेसान, कारबेन्डाजिम आदि दवाओं से उपचारित करके ही बुआई करते हैं।

चूर्णिलः यह रोग पौधों की पत्तियों एवं टहनियों पर नजर आता है। सम्पूर्ण पौधा सफेद चूर्ण से ढक जाता है, पत्तियों का हरापन नष्ट होकर पत्तियां सूख जाती है।

नियंत्रणः

1. 1.5 किग्रा घुलनशील गन्धक का घोल अथवा 20–25 किग्रा गन्धक का चूर्ण प्रति हेक्टेयर फसल पर छिड़कते हैं।

2. कैराथेन एल.सी. अथवा कैलेक्सीन की 750 एम.एल. दवा का घोल छिड़कने से यह बीमारी सफलतापूर्वक रोकी जा सकती है।

तने की सूजनः पौधे के तने पर सूजन आ जाती है जिससे पौधा नष्ट हो जाता है तथा पैदावार घट जाती है। बीज फूल जाते हैं और इनकी खाद्य एवं बीज के गुण समाप्त हो जाते हैं।

नियंत्रणः

1. कारबेन्डाजिम व थीरम 2 ग्राम प्रति किग्रा बीजोपचार तथा पर्णीय छिड़काव करें।

2. फसल चक अपनाना चाहियें।

3. रोग रहित स्वस्थ बीज की बुआई।

4. आर.सी.आर.–41 रोगरोधी प्रजाति का उपयोग करना चाहिए।

माहूः इस कीट का भारी आक्रमण मुख्यतः पुष्प आते समय व बीज बनते समय होता है। ये कीड़े पौधों के कोमल अंगों का रस चूसते हैं जिससे उपज में भारी कमी आ जाती है।

नियंत्रणः

1. 500–750 मिली इण्डोसल्फान 35 सी.सी. प्रति हेक्टेय की दर ये 500 लीटर पानी में घोल बनाकर शाम के समय छिड़काव करते हैं।

2. 200–250 मिली फास्फामिडान 85 ई.सी. या 500–700 मिली डाईमिथाएट 30 ई. सी. प्रति हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में घोल कर सायंकाल में छिड़काव करते हैं।

कटाई व ओसाईः

धनिया की फसल किस्म, स्थानीय मौसम, बुआई के समय व सिंचाई व्यवस्था के अनुसार 90–135 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। दाने पीले पड़ते ही फसल की कटाई कर देनी चाहिए। कटी फसल को धूप में नहीं सूखने देते हैं। धूप में बीज का रंग खराब हो जाता है। फसल सूखे जाने पर हल्का कूट कर दाने अलग कर ओसाई करके दानों को साफ कर लेते हैं।

कटाई

फसल की कटाई 110–140 दिन मे की जाती है। सिंचित अवस्था मे 140 दिन एवं असिंचित अवस्था में 110 दिन पर कटाई की जाती है।

उपज

धनिया की सिंचित अवस्था में 18–25 कुंतल एवं असिंचित अवस्था में 8–10 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाती है।